सूरह — एक कहानी

सूरह अल-ग़ाशिया

छा जाने वाली

पूरा सफ़र — दो चेहरे, और चार निशानियाँ —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 88 • 26 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

हल अताक हदीसुल्-ग़ाशियह
1. क्या आपके पास छा जाने वाली की ख़बर पहुँची?

'आमिलतुन नासिबह
3. मेहनत करते हुए, थके हुए।

लि-स'यिहा राज़ियह
9. अपनी कोशिश पर राज़ी।

अ फ़-ला यन्ज़ुरून इलल्-इबिलि कैफ़ ख़ुलिक़त
17. तो क्या वो ऊँटों को नहीं देखते, कैसे बनाए गए?

फ़-ज़क्किर इन्नमा अन्त मुज़क्किर
21. तो नसीहत कीजिए, आप सिर्फ़ नसीहत करने वाले हैं।

इन्ना इलैना इयाबहुम
25. बेशक हमारी ही तरफ़ उनका लौटना है।

क्या आपके पास ख़बर पहुँची?

बेटा, यह सूरह एक ऐसे सवाल से शुरू होती है जो इतनी नरमी से पूछा गया है कि लगता है जैसे किसी ने कंधे पर हाथ रख दिया हो: 'हल अताक हदीसुल्-ग़ाशियह — क्या आप तक अल-ग़ाशिया की ख़बर पहुँची?'

'ग़ाशिया', बेटा, उस चीज़ को कहते हैं जो ढाँप ले, घेर ले, छा जाए — जिस तरह किसी चीज़ पर पूरा कपड़ा डाल दिया जाए, या एक लहर तैरने वाले को ढाँप ले। यह क़ियामत के नामों में से एक है: वो वाक़िआ जो सब पर और हर चीज़ पर छा जाएगा, और कुछ भी उसके बाहर नहीं रहेगा।

और सवाल का अंदाज़ देखिए। अल्लाह 'जान लो' या 'ख़बरदार रहो' से शुरू नहीं करते। वो पूछते हैं: क्या यह ख़बर आप तक पहुँची? उलमा कहते हैं कि ऐसे सवाल सुनने वाले को आगे झुकाने के लिए होते हैं — ख़बर आने से पहले दिल को तैयार करने के

लिए। बेटा, जब कोई आपसे कहे 'सुना तुमने क्या हुआ?' — तो आप अपना काम रोक कर सुनने लगते हैं। अल्लाह इसी इंसानी फ़ितरत को इस्तेमाल कर के हमारे कान खोल रहे हैं।

वो चेहरे जिन्होंने मेहनत की और कुछ न पाया

'वुजूहुंय्-यौम-इज़िन ख़ाशि'अह — उस दिन कुछ चेहरे झुके हुए, ज़लील होंगे — 'आमिलतुन नासिबह — मेहनत करते हुए, थके हुए।'

बेटा, इन दो लफ़्ज़ों पर बैठिए: "आमिलतुन नासिबह' — सख़्त मेहनत करते हुए, और उस मेहनत से चूर। और यही वो बात है जो हमें हिला देनी चाहिए: इन लोगों ने काम किया। ये सुस्त नहीं थे। इन्होंने मशक़्क़त की, ख़ुद को खपाया, ये थके हुए थे।

उलमा दो तशरीहात ज़िक्र करते हैं, और दोनों क़ाबिल-ए-याद हैं। एक: वो उस दिन ख़ुद मेहनत और थकन में होंगे — ज़ंजीरें घसीटते हुए, हाँके जाते हुए, अज़ाब से चूर। दूसरी — और यही हमसे बात करती है: उन्होंने दुनिया में सख़्त मेहनत की, और उस सारी मेहनत से उन्हें वहाँ कुछ भी न मिला।

बेटा, उस आदमी का तसव्वुर कीजिए जिसने ज़िंदगी भर अठारह घंटे रोज़ाना काम किया; उस औरत का जिसने ख़ुद को ख़िदमत में खपा दिया; उस शख़्स का जिसने किसी झूटे दीन या झूटे मक़सद के लिए रोज़े रखे, सफ़र किए, अपने आप को महरूम रखा। मेहनत, एक क़िस्म का इख़लास, सची थकन — और फिर फ़ाइल खोली जाती है और टोटल सिफ़्र है। क्योंकि मेहनत या तो ग़लत मंज़िल के लिए थी, या उस तरीक़े से थी जो अल्लाह ने कभी माँगा ही नहीं।

इसी लिए हमारे उलमा ने कहा: किसी भी अमल के क़ुबूल होने के लिए दो चीज़ें दुरुस्त होनी चाहिएँ — कि वो सिर्फ़ अल्लाह के लिए हो, और कि वो उस तरीक़े पर हो जो उन्होंने मुक़र्रर किया। बेटा, अकेली मेहनत काफ़ी नहीं। जो शख़्स ग़लत सिम्त में ज़ोर से चप्पू चला रहा हो, वो बस ग़लत जगह जल्दी पहुँचता है।

'तस्ला नारन हामियह — वो सख़्त गरम आग में जलेंगे — तुस्क़ा मिन 'ऐनिन आनियह

— उन्हें खौलते चश्मे से पिलाया जाएगा।'

वो चेहरे जो अपनी कोशिश पर राज़ी होंगे

और फिर सूरह पलटती है, और रौशनी बिल्कुल बदल जाती है: 'वुजूहुंय्-यौम-इज़िन ना'इमह — उस दिन कुछ चेहरे ताज़ा, ख़ुश-हाल होंगे — लि-स'यिहा राज़ियह — अपनी कोशिश पर राज़ी।'

बेटा, वो ख़ूबसूरत तवाज़ुन देखिए जो क़ुरआन ने बनाया है। पहले गिरोह के पास भी 'मेहनत' थी — और उसने उन्हें बेकार में थका दिया। इस गिरोह के पास 'स'य' है — कोशिश — और वो राज़ियह हैं, उस पर राज़ी, मुतमइन जब वो देखते हैं कि उससे क्या निकला।

दोनों गिरोहों ने काम किया, बेटा। फ़र्क़ सिम्त का था, इख़लास का था, और इस बात का था कि अल्लाह ने असल में माँगा क्या था।

और यह कैसी तरकीब है निशाने के लिए: अपनी ही कोशिश को पीछे मुड़ कर देखें और उस पर राज़ी हों। हर वो तहज्जुद जिसके लिए आपने ख़ुद को घसीटा, हर वो रुपया जो आपने दिया जब रखना चाहते थे, हर वो ग़ुस्सा जो आपने पी लिया, हर वो गुनाह जो आपने छोड़ दिया जब वो आसान और हाज़िर था — उस दिन आप पूरा रिकॉर्ड देख कर सोचेंगे: हर एक बात इसके लायक़ थी।

'फ़ी जन्नतिन 'आलियह — एक बुलंद बाग़ में — ला तस्म'उ फ़ीहा लाग़ियह — जिसमें आप कोई बेकार बात नहीं सुनेंगे।' बेटा, फिर अल्लाह इस बात को नुमायाँ करते हैं: एक ऐसी जगह जहाँ कोई फ़ुज़ूल गुफ़्तगू नहीं। न ग़ीबत, न तनाज़ा, न वो शोर जो आपको पहले से ज़्यादा ख़ाली छोड़ जाए।

'फ़ीहा 'ऐनुन जारियह — उसमें बहता चश्मा है — फ़ीहा सुरुरुम्-मर्फ़ू'अह — उसमें ऊँचे तख़्त हैं — व अक्वाबुम्-मौज़ू'अह — और रखे हुए प्याले — व नमारिक़ु मस्फ़ूफ़ह — और क़तार में लगे गद्दे — व ज़राबिय्यु मब्सूसह — और बिछे हुए क़ालीन।'

बेटा, इस बयान की मेहमान-नवाज़ी महसूस कीजिए। यह उस मेज़बान की तस्वीर है

जिसने मेहमान के आने से पहले कमरा तैयार कर रखा हो: प्याले पहले से भरे और रखे हुए, गद्दे क़तार में लगाए हुए, क़ालीन बिछाए हुए। कुछ करने को बाक़ी नहीं, कुछ माँगने की ज़रूरत नहीं। अल्लाह एक ऐसी जगह बयान कर रहे हैं जो आपके लिए तैयार की गई है — और वो उसे इतनी तफ़्सील से बयान करते हैं ताकि आप उसे इतना चाहें कि उसके लिए मेहनत करें।

चार निशानियाँ जो आप देख सकते हैं

और अब, बेटा, क़ुरआन का एक सबसे मशहूर हिस्सा आता है — और इसकी ख़ूबसूरती यह है कि यह चार आम चीज़ों की तरफ़ इशारा करता है, एक मुकम्मल तरतीब में।

'अ फ़-ला यन्ज़ुरून इलल्-इबिलि कैफ़ ख़ुलिक़त — तो क्या वो ऊँटों को नहीं देखते — कि वो कैसे बनाए गए? व इलस्-समा-इ कैफ़ रुफ़िअत — और आसमान को — कैसे बुलंद किया गया? व इलल्-जिबालि कैफ़ नुसिबत — और पहाड़ों को — कैसे गाड़े गए? व इलल्-अर्ज़ि कैफ़ सुतिहत — और ज़मीन को — कैसे बिछाई गई?'

बेटा, पहले देखिए ख़िताब किससे है: सहराई अरबों से। और देखिए अल्लाह उनकी नज़र किस तरतीब से घुमाते हैं। पहले, ऊँट — वो चीज़ जो उनके बिल्कुल पास थी, वो जानवर जिस पर उनकी पूरी ज़िंदगी का दार-ओ-मदार था। फिर, ऊपर आसमान की तरफ़ — वो वसीअ छत। फिर, उफ़क़ पर पहाड़ों की तरफ़। फिर, नीचे अपने पाँव तले ज़मीन की तरफ़। क़रीब, ऊपर, सामने, नीचे — सर का एक पूरा चक्कर, और हर सिम्त दलीलों से भरी हुई।

और ऊँट पहले क्यों? बेटा, उस जानवर के बारे में सोचिए। वो बैठ जाता है ताकि एक बच्चा भी उस पर लाद सके। वो जलती रेत पर बहुत भारी वज़न उठाता है। वो पानी जमा करता है और कई दिन बग़ैर पिए गुज़र सकता है। उसकी पलकें और नथने आँधी में बंद हो जाने के लिए बनाए गए हैं। उसके पाँव चौड़े गद्दे हैं जो रेत में नहीं धँसते। उसका मे'दा वो काँटेदार पौदे हज़म करता है जो कोई दूसरा जानवर नहीं खा सकता। और वो दूध देता है, ऊन देता है, सवारी देता है — एक ही मख़लूक़ में पूरी मईशत। एक

बदू के लिए ऊँट ज़िंदगी और मौत का फ़र्क़ था — और उसे ठीक उस दुनिया के लिए, ख़ूबी दर ख़ूबी, तैयार किया गया था जिसमें वो रहता था।

बेटा, हमारे लिए सबक़ तरीक़े का है: अल्लाह ने उन्हें किसी लैबोरेटरी या फ़लसफ़े के लेक्चर में नहीं भेजा। उन्होंने कहा: जो पहले से तुम्हारे सामने है उसे देखो। आपकी अपनी रोज़मर्रा ज़िंदगी उन दलीलों से भरी है जिन्हें आपने देखना छोड़ दिया है। अपने खाने को देखिए, अपने जिस्म को, अपने बच्चों को, बारिश को, मौसमों को — ग़ौर-ओ-फ़िक्र के लिए सफ़र ज़रूरी नहीं।

आप उन पर दारोग़ा नहीं

और फिर वो हुक्म आता है जिसकी हर उस्ताद, हर वालिद, हर मुबल्लिग़ और हर फ़िक्रमंद मोमिन को ज़रूरत है: 'फ़-ज़क्किर इन्नमा अन्त मुज़क्किर — तो नसीहत कीजिए — आप सिर्फ़ नसीहत करने वाले हैं — लस्त 'अलैहिम बि-मुसैतिर — आप उन पर दारोग़ा नहीं हैं।'

बेटा, यह क़ुरआन के सबसे आज़ाद करने वाले जुमलों में से है। आपका काम याद दिलाना है। हिदायत आपका महकमा नहीं है। 'मुसैतिर' उस शख़्स को कहते हैं जिसे दूसरे पर इख़्तियार हो, जो ग़ालिब आ जाए, जो नतीजा ज़बरदस्ती निकलवाए।

सोचिए इस बात को भूलने से कितनी तकलीफ़ पैदा होती है: वो बाप जो इसलिए सो नहीं पाता कि उसका बेटा नमाज़ नहीं पढ़ता, वो बीवी जो टोक टोक कर शौहर को चिड़चिड़ा बना देती है, वो दावत का काम करने वाला जो इसलिए टूट जाता है कि लोग बदले नहीं। बेटा, अपना काम कीजिए — इख़लास के साथ, गर्मजोशी के साथ, मुसलसल — और फिर नतीजा अल्लाह के हवाले कर दीजिए। ख़ुद नबी ﷺ से यही कहा गया। उन्हें कहीं और बताया गया: 'आप जिसे चाहें हिदायत नहीं दे सकते, मगर अल्लाह जिसे चाहते हैं हिदायत देते हैं।' अगर बेहतरीन मख़लूक़ को नताइज का ज़िम्मेदार नहीं बनाया गया, तो आप भी नहीं हैं।

'इल्ला मन तवल्ला व कफ़र — मगर जिसने मुँह फेरा और इनकार किया — फ़-यु'अज़्ज़िबुहुल्लाहुल्-'अज़ाबल्-अक्बर — तो अल्लाह उसे सबसे बड़ा अज़ाब देंगे।'

और सूरह की आख़िरी आयतें, बेटा, उस सब के नीचे एक पुर-सुकून बुनियाद हैं: 'इन्ना इलैना इयाबहुम — बेशक हमारी ही तरफ़ उनका लौटना है — सुम्म इन्ना 'अलैना हिसाबहुम — फिर बेशक हमारे ही ज़िम्मे उनका हिसाब है।'

बेटा, इसे दोबारा पढ़िए, क्योंकि यह आपके सीने से एक बोझ उतार देती है। उनका लौटना हमारी तरफ़ है — आपकी तरफ़ नहीं। उनका हिसाब हमारे ज़िम्मे है — आपके ज़िम्मे नहीं। आप न मुंसिफ़ हैं, न नाफ़िज़ करने वाले, न वो जो फ़ैसला करे कि कौन कहाँ जाएगा।

तो वो सूरह जो 'क्या आपके पास ख़बर पहुँची?' से शुरू हुई थी, आख़िर में आपको ठीक यह बताती है कि उस ख़बर का करना क्या है: उसे अपने आप को बदलने दीजिए, दूसरों को नरमी से याद दिलाइए, और हिसाब उस ज़ात पर छोड़ दीजिए जो उसके मालिक हैं।

इस सूरह से क्या सीखा

1. अकेली मेहनत किसी चीज़ की ज़मानत नहीं: 'मेहनत करते हुए, थके हुए' का अंजाम आग भी हो सकता है अगर सिम्त या तरीक़ा ग़लत था।

2. हर अमल की दो शर्तें — ख़ालिस अल्लाह के लिए, और उसी तरीक़े पर जो उन्होंने मुक़र्रर किया।

3. उस दिन 'अपनी कोशिश पर राज़ी' होने का निशाना रखिए: हर भारी नमाज़ और हर पी लिया गया ग़ुस्सा उसके लायक़ लगेगा।

4. जन्नत का बयान ऐसे है जैसे वो पहले से तैयार है — प्याले रखे हुए, गद्दे क़तार में: ऐसे काम कीजिए जैसे किसी ने आपका इंतिज़ार किया हो।

5. ग़ौर-ओ-फ़िक्र के लिए सफ़र ज़रूरी नहीं — क़रीब देखिए, ऊपर, सामने, नीचे; ऊँट और आसमान दोनों दलील हैं।

6. आप नसीहत करने वाले हैं, दारोग़ा नहीं — अपना हिस्सा गर्मजोशी से कीजिए, और दूसरों के नताइज का बोझ उतारना छोड़ दीजिए।

7. 'हमारी तरफ़ उनका लौटना, और हमारे ज़िम्मे उनका हिसाब' — जो कभी आपके तय करने का था ही नहीं, उसे छोड़ दीजिए।

या अल्लाह, हमारी कोशिश को क़ुबूल फ़रमाइए, हमारे चेहरों को उन में रखिए जो राज़ी होंगे, और हमें बग़ैर दारोग़ा बने नसीहत करना सिखा दीजिए। आमीन।